22 जनवरी 2020 से होगी महाराष्ट्र में शिक्षा और सरकारी नौकरियों में मराठा आरक्षण की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई। प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे, जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस सूर्यकांत की पीठ ने सभी पक्षकारों से इस दौरान अपने-अपने दस्तावेज पूरे करने को कहा है।

हाजी महबूब भी दाखिल करेंगे पुनर्विचार याचिका

दो टूक ▶ मस्जिद के पक्षकार रहे महमूद ने पर्सनल लॉ बोर्ड के फैसले को उचित बताया

हाजी स्थानीय मुस्लिम नेता के तौर पर लंबे समय से बाबरी मस्जिद के पर्याय रहे हैं

जागरण संवाददाता, अयोध्या

मस्जिद के पक्षकार हाजी महबूब भी सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दाखिल करेंगे। उन्होंने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की पुनर्विचार याचिका को उचित बताते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला शक पैदा करने वाला है। हाजी ने मस्जिद के लिए पांच एकड़ जमीन लेने के सवाल पर कहा कि अभी तो हम पुनर्विचार याचिका दायर करेंगे। इसके बाद देखा जाएगा कि क्या करना है। हाजी स्थानीय मुस्लिम नेता के तौर पर लंबे समय से बाबरी मस्जिद के पर्याय रहे हैं। उनके पिता हाजी फेकू 1949 में विवादित ढांचे में रामलला के प्राकट्य का प्रतिकार करने वाले रहे हैं। एक दशक बाद 1959 में निर्मोही अखाड़ा की ओर से जब रामजन्मभूमि पर दावा किया तो हाजी ने इसका अदालत में प्रतिवाद किया। यह कहते हुए कि वह मस्जिद है और उस पर निर्मोही अखाड़ा का अधिकार संभव नहीं है। इसके बाद लंबा वक्त गुजरा। जहां बाबरी मस्जिद के मुद्दई हाशिम अंसारी नरम पड़े और उन्होंने विवादित स्थल हिंदुओं को देने का रुख दर्शाया, वहीं हाजी कभी मस्जिद से समझौते को तैयार नहीं दिखे।

असमंजस में जमीयत का महमूद मदनी गुट

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

नई दिल्ली में जमीयत के मुख्यालय में चल रही राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक। जागरण

राममंदिर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर पुनर्विचार याचिका दाखिल करने को लेकर जमीयत का महमूद मदनी गुट असमंजस में है। यही कारण है कि जमीयत-उलेमा-ए-हिंद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आपात बैठक में देर रात तक मंथन चलता रहा, पर कोई फैसला नहीं किया जा सका। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि आज इस मामले में जमीयत का रुख तय हो सकेगा। महमूद मदनी गुट की यह बैठक आइटीओ स्थित जमीयत के मुख्यालय में चल रही है, जिसमें कार्यकारिणी के सदस्यों के अलावा वरिष्ठ अधिवक्ता भी शामिल थे। बैठक में विचार-विमर्श इसपर हो रहा है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सर्वोच्च फैसला मानते हुए स्वीकार कर लिया जाए या इसके खिलाफ पुनर्विचार याचिका दाखिल करने के रुख का समर्थन किया जाए।

सूत्रों के मुताबिक बैठक में शामिल 40 सदस्यों की इसपर राय बंटी हुई है। जमीयत के अध्यक्ष अरशद मदनी गुट ने अपना रुख पहले ही स्पष्ट कर दिया है। लखनऊ में हुई मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और जमीयत की बैठक में अरशद मदनी ने पुनर्विचार याचिका दाखिल करने का समर्थन किया है। हालांकि, उसी बैठक को बीच में छोड़कर महमूद मदनी बाहर निकल गए थे।

माना जा रहा है कि वह पुनर्विचार याचिका के पक्ष में नहीं हैं। इसके अलावा बैठक में यह भी तय नहीं हो पाया है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा मस्जिद के लिए पांच एकड़ जमीन देने के फैसले को स्वीकार किया जाए या नहीं। हालांकि, महमूद मदनी के एक करीबी ने कहा कि उनका अकेले का फैसला जमीयत का निर्णय नहीं हो सकता है। कार्यकारिणी जो निर्णय लेगी, वही जमीयत का रुख होगा।

पर्सनल लॉ बोर्ड बन गया व्यक्तिगत मिल्कियत : मौलाना तौकीर

जागरण संवाददाता, बरेली

ऑल इंडिया इत्तेहादे मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष ने कहा, अयोध्या मामले में पुनर्विचार याचिका का फैसला गलत

ऑल इंडिया इत्तेहादे मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकीर रजा खां ने ऑल इंडिया पर्सनल लॉ बोर्ड के पदाधिकारियों पर हमला बोला है। बोर्ड को व्यक्तिगत मिल्कियत बनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि मुसलमानों को भड़काकर देश का माहौल खराब करने का प्रयास हो रहा है। पुनर्विचार याचिका दाखिल करने का फैसला इसी रणनीति का हिस्सा है, जिसे कुबूल नहीं किया जा सकता। वह बुधवार को दरगाह आला हजरत के पास स्थित आवास पर पत्रकारों से बात कर रहे थे।

मौलाना ने कहा कि अयोध्या पर फैसला आने से पहले पर्सनल लॉ बोर्ड के प्रमुख लोगों की तरफ से आश्वस्त किया गया था कि सुप्रीम कोर्ट का जो भी फैसला आएगा उसे मानेंगे। इसी आधार पर कोर्ट के बाहर सुलह की कोशिशों में बोर्ड की तरफ से हिस्सा नहीं लिया गया था। मौलाना ने आरोप लगाया कि बोर्ड अब दो संगठनों के इशारे पर पुनर्विचार याचिका दाखिल करने की घोषणा कर रहा है। यह न देशहित और न मुसलमानों के लिए ही बेहतर है। बोर्ड के कुछ लोग चर्चा में बने रहने की वजह से ऐसा कर रहे हैं। उन्होंने ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआइएमआइएम) के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी का नाम लेकर कहा कि वह राजनीतिक व्यक्ति होने के बावजूद बोर्ड का अहम हिस्सा हैं। ऐसे ही बोर्ड में शामिल अन्य लोगों के अपने

मौलाना तौकीर रजा खां। फाइल

जमीन के एवज में अदा करें मुआवजा

मौलाना ने सुन्नी वक्फ बोर्ड को सलाह दी है कि अयोध्या में पांच एकड़ जमीन लेना अगर जरूरी हो तो उसकी एवज में मुआवजा जरूर अदा किया जाए, क्योंकि शरीयत के एतबार से ऐसा करना जरूरी होगा।

संगठन चल रहे हैं। ओवैसी सेक्युलर ताकतों को कमजोर करने के लिए पश्चिम बंगाल में अपनी पार्टी के उम्मीदवार उतारने की बात कर रहे हैं। अगर वह ऐसा करते हैं तो फिर हैदराबाद जाकर ही उनका विरोध किया जाएगा।

श्रीराम की मूर्ति लगाने से पहले जांची जाएगी जमीन

जासं, अयोध्या : राम मंदिर से पहले रामनगरी में भगवान श्रीराम की भव्य एवं विशाल मूर्ति लगाने की तैयारी तेज हो गई है। इसको लेकर 61 हेक्टेयर जमीन की तकनीकी व विधिक जांच के लिए कमेटी गठित कर दी गई है। राजकीय निर्माण निगम के प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में गठित कमेटी 15 दिन में शासन को अपनी विस्तृत रिपोर्ट सौंपेगी। अयोध्या डीएम की ओर से नामित अधिकारी, निर्माण निगम के मुख्य वास्तुविद, महाप्रबंधक, जिला शासकीय अधिवक्ता और क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी इस कमेटी के सदस्य होंगे।

पर्यटन विभाग के प्रमुख सचिव जितेंद्र कुमार ने एक आदेश में कहा कि भगवान श्रीराम पर आधारित डिजिटल म्यूजियम, सेंट्रल लाइब्रेरी, पार्किंग, फूड प्लाजा, लैंडस्केपिंग, श्रीराम की प्रतिमा एवं अन्य मूलभूत पर्यटक सुविधाओं की योजना के लिए चिह्नित जमीन की तकनीकी और विधिक जांच एक कमेटी करेगी। इसके अलावा प्रमुख सचिव ने अयोध्या के मुख्य अभियंता (सिंचाई) से चिह्नित भूमि के अधिग्रहण और खरीद के लिए अनापत्ति जल्द देने को कहा है।

भूमि अधिग्रहण का फंसा पेच : अधिग्रहण में निर्धारित सर्किल रेट का पेच फंसा है। 65 काश्तकारों ने भूमि अधिग्रहण का विरोध किया था। इसके बाद सरयू नगर कॉलोनी विकास समिति की ओर से इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में याचिका प्रस्तुत की गई। अदालत ने प्रकरण की सुनवाई करते हुए जिला प्रशासन को विधि सम्मत भूमि अधिग्रहण का आदेश दिया है।

रामलला के दर्शनार्थियों के लिए चलेगी राम रसोई

जागरण संवाददाता, अयोध्या

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का उत्साह रामलला के दर्शनार्थियों के लिए राम रसोई से बयां होगी। इस योजना के सूत्रधार पूर्व आइपीएस अधिकारी व पटना के प्रख्यात महावीर मंदिर सेवा ट्रस्ट तथा अमावा राममंदिर सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल हैं। अमावा राममंदिर रामजन्मभूमि से कुछ ही फासले पर रामलला के दर्शन मार्ग पर ही स्थित है। राम रसोई इसी परिसर में संचालित होगी। राम रसोई की शुरुआत 23 नवंबर से एक दिसंबर को पड़ रहे सीता-राम विवाहोत्सव के बीच होने की संभावना है। अनुमान है कि शुरू में पांच सौ से एक हजार दर्शनार्थी रामरसोई में भोजन करेंगे पर अगले कुछ माह में ही यह संख्या पांच हजार तक पहुंच सकती है। इसी हिसाब से आचार्य कुणाल समुचित तैयारी में लगे हैं। बिहार से आधा दर्जन विशेषज्ञ रसोइए अमावा मंदिर पहुंच भी गए हैं। इनके सहयोग के लिए कुछ अन्य स्थानीय श्रमिकों को लगाया जाएगा।

कुणाल किशोर ने दो दशक पूर्व सूर्यवंशीय नरेशों के त्रेतायुगीन देवालय माने जाने वाले अमावा मंदिर के उद्धार का बीड़ा उठाया था। इसी मंदिर के मुख्य द्वार की दूसरी मंजिल पर उन्होंने इसी माह सुप्रीम फैसला आने के पूर्व भगवान राम के दर्शनीय बाल विग्रह की

आचार्य किशोर कुणाल। जागरण

'गोविंद भोग' से सज्जित होगा रामभक्तों का भोजन

राम रसोई में यूं तो चावल, दाल, रोटी, सब्जी के रूप में रामलला के दर्शनार्थियों को परिपूर्ण भोजन मिलेगा, लेकिन चावल गोविंद भोग नाम की विशेष प्रजाति का होगा। बिहार के कैमूर जिले में मां भवानी के सुप्रसिद्ध मंदिर मुंडेश्वरी की पहाड़ी से आने वाले पानी से उपजने वाले इस चावल के स्वाद-सुगंध की साख वैश्विक है। जल्द ही गोविंद भोग की पहली खेप अयोध्या पहुंचेगी।

स्थापना कराई है। वह सुप्रीम कोर्ट में राममंदिर के पक्षकार भी रहे हैं। इस विवाद के अंत में उनकी कृति 'अयोध्या रीविजिटेड' को अहम माना जाता है।

साढ़े तीन दशक पूर्व यहां तैयार हुई थी मंदिर आंदोलन की नींव

रघुवरशरण, अयोध्या

अयोध्या स्थित सुग्रीव किला मंदिर। जागरण

मंदिर आंदोलन जब परवान चढ़ा, तब उसके हमराह बनने वालों का तांता लग गया। 1984 में शुरुआत के समय आंदोलन का केंद्र सुग्रीव किला मंदिर बना। इसके पीछे मंदिर आंदोलन को धार देने की जुगत में लगे विहिप नेतृत्व की सोची-समझी योजना थी। उन दिनों रामनगरी में जिन चुनिंदा संतों का सामाजिक सरोकार शीर्ष पर था, उनमें सुग्रीव किला पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य प्रमुख थे। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जिस राम ज्योति यात्रा के संवाहक थे, वह एक प्रकार से मंदिर आंदोलन का ही पूर्ववर्ती संस्करण था।

1973 में देवराहा बाबा ने किया था सूत्रपात : आंदोलन का सूत्रपात 1973 में दिग्गज संत देवराहा बाबा ने किया था और इसकी कमान अपने योग्यतम शिष्य पुरुषोत्तमाचार्य को सौंपी थी। राम ज्योति यात्रा के साथ देश के बड़े हिस्से का भ्रमण करते हुए पुरुषोत्तमाचार्य रामनगरी पहुंचे तो त्रेतायुगीन स्थल सुग्रीव किला को केंद्र बनाकर यहीं के होकर रह गए। हालांकि ज्योति यात्राओं के माध्यम से राम नाम के प्रचार-प्रसार की उनकी मुहिम तब भी जारी रही। सामाजिक जीवन में रमे स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य ने रामनगरी में पैठ बनाने की कोशिश में लगी विहिप को भी खुले दिल से संरक्षण प्रदान किया। वह 1984 का प्रारंभिक दौर था, जब एक ओर विहिप संतों की धर्मसंसद और सभा के माध्यम से पूरे देश में मंदिर आंदोलन को प्रभावी बनाने में लगी थी, दूसरी ओर वह अयोध्या में जमीन तैयार करने में लगी थी। इसके लिए उसे एक कार्यालय की दरकार थी। यह जरूरत स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य ने अपने आश्रम का एक कक्ष देकर पूरी की।

मंदिर आंदोलन के प्रभावी किरदार थे स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य : भगवान राम से वैयक्तिक अनुराग के चलते स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य स्वयं भी मंदिर आंदोलन के प्रभावी किरदार बनकर उभरे। वह न केवल 1986 में गठित रामजन्मभूमि न्यास के संस्थापक सदस्यों में रहे बल्कि स्थानीय स्तर पर परमहंस रामचंद्रदास एवं महंत नृत्यगोपालदास के साथ मंदिर आंदोलन की त्रिमूर्ति के अहम घटक बनकर प्रतिष्ठापित रहे। 1989 में शिलान्यास और 1990 में कारसेवा के साथ मंदिर आंदोलन और उसके सूत्रधार विहिप नेतृत्व का जादू सिर

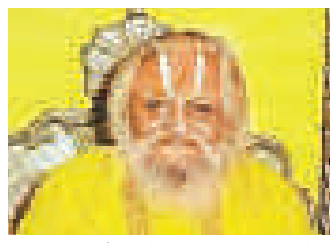
जगदगुरु स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य। फाइल फोटो

चढ़कर बोलने लगा था और इसी के साथ ही रामनगरी में विहिप को सुग्रीव किला के अलावा कुछ अन्य ठौर भी सुलभ हुए पर आंदोलन के फलक पर स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य पूर्व की भांति प्रखर-प्रभावी बने रहे। इसी वर्ष नौ मार्च को 96 वर्ष की अवस्था में वैकुंठवासी हुए स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य की सक्रियता गत एक दशक से कुछ थम सी गई थी पर उनका दिल सदैव राममंदिर के लिए धड़कता रहा।

हमें रामलला का भव्यतम मंदिर चाहिए : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य उत्तराधिकारी जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी विश्वेशप्रपन्नाचार्य कहते हैं, आज हमारी खुशी का ठिकाना नहीं है। हमारे पूज्य गुरुदेव ने जिस स्वप्न को साधने के लिए अपना जीवन समर्पित किया, वह साकार हुआ है। यद्यपि रामनगरी में विहिप का प्रारंभिक केंद्र मंदिर के दावेदारों की नजर में कुछ हाशिए पर सरक गया है, लेकिन विश्वेशप्रपन्नाचार्य को इसका कोई मलाल नहीं है।

दिलीप ज्ञानदेव बने मंदिर निर्माण न्यास के उपाध्यक्ष

जागरण संवाददाता, अयोध्या : रामजन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत जन्मेजयशरण ने महाराष्ट्र की पिछली सरकार में सामाजिक न्याय मंत्री रहे दिलीप ज्ञानदेव कांबले को न्यास का उपाध्यक्ष बनाया है। उन्होंने अपने आश्रम जानकीघाट बड़ास्थान में कांबले को नियुक्ति पत्र सौंपा।

इस मौके पर महंत जन्मेजयशरण ने स्पष्ट किया कि हम सब मंदिर निर्माण के लिए संभावित शासकीय न्यास के साथ हैं और मंदिर निर्माण न्यास रामलला के भव्य मंदिर के लिए हरसंभव सहयोग और प्रयास की तैयारी कर रहा है। इसी क्रम में कांबले जैसे कद्दावर समाजसेवी और राजनीतिज्ञ को न्यास उपाध्यक्ष की अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इस दौरान मीडिया से मुखातिब दिलीप ज्ञानदेव कांबले ने कहा, मैं शुरुआत से ही मंदिर आंदोलन से जुड़ा रहा हूं और फैसला आने के बाद मंदिर निर्माण के लिए हरसंभव सहयोग के प्रति उत्सुक हूं। उन्होंने महंत जन्मेजयशरण के प्रति आभार भी ज्ञापित किया।

डॉ. फिरोज खान के समर्थन में उतरे साधु-संत

जागरण संवाददाता, जयपुर

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के संस्कृत विभाग में राजस्थान के जयपुर जिले के बगरू निवासी डॉ. फिरोज खान के सहायक प्रोफेसर पद पर चयन को लेकर एक तरफ जहां विरोध हो रहा है, वहीं राजस्थान में संस्कृत के विद्वान, साधु-संत और हिंदू समाज के कुछ लोग उनके पक्ष में उतर आए हैं। मुस्लिम युवक के बीएचयू जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर चयनित होने को लेकर खुशी जताने के लिए कुछ लोग बुधवार को उनके घर भी पहुंचे। इस दौरान बगरू स्थित रामदेव गोशाला में भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। इसमें फिरोज खान के पिता रमजान खान उर्फ मुन्ना मास्टर ने भगवान कृष्ण के भजन सुनाए।

पुष्कर से पांच-छह साधु रमजान खान के घर भी गए और उन्हें बेटे के बीएचयू में चयनित होने पर बधाई दी। गोशाला के संचालकों में से एक चंपालाल का कहना है कि यह हमारे लिए फक्र की बात है कि मुस्लिम समाज का युवक बीएचयू में विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाएगा। पिछले दस साल से नियमित गायों से सेवा के लिए गोशाला जा रहे गोविंद अग्रवाल ने कहा कि रमजान खान को देखकर कभी लगता ही नहीं है कि उनसे धर्म के आधार पर भेदभाव किया जाए। वे भगवान कृष्ण और गाय के भक्त हैं।

जयपुर में बुधवार को एक गोशाला में भजन सुनाते बीएचयू के संस्कृत विभाग में सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुए डॉ. फिरोज खान के पिता रमजान खान। प्रेट्र

पिता ने भजन गाए और हनुमान चालीसा सुनाया : डॉ. फिरोज खान के पिता रमजान खान ने बुधवार को रामदेव गोशाला में भजन गाते। इस दौरान जब उन्होंने हनुमान चालीसा सुनाया तो गोशाला में मौजूद साधु-संत और अन्य लोग खुशी से झुम उठे। हालांकि, रमजान खान नियमित इस गोशाला में भजन गाते रहते हैं, लेकिन बेटे की बीएचयू में नियुक्ति के विरोध के बाद पहली बार बुधवार को ही उन्होंने यहां भजन गाए। यहां मौजूद लोगों ने एक स्वर में फिरोज खान की नियुक्ति पर हो रहे विरोध को गलत बताया। बगरू स्थित राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत स्कूल के शिक्षक दिनेश शर्मा ने कहा कि मैंने फिरोज खान को संस्कृत पढ़ाई है। वह शुरू से ही संस्कृत पढ़ने में दिलचस्पी रखता था। लेकिन, यह दुख की बात है कि अब उसका विरोध हो रहा है।

श्याम सुरभि वंदना पुस्तक के लेखक भी हैं रमजान

फिरोज खान के पिता नियमित गोसेवा करते हैं। बुधवार को जब दैनिक जागरण ने उनसे बात की तो वह रामदेव गोशाला में गायों को गुड़ खिला रहे थे। उनका मोबाइल फोन गोशाला के चौकीदार ने रिसीव किया। पूछने पर बताया कि रमजान भाई गायों को गुड़ खिला रहे हैं। बाद में बात हो सकेगी। बगरू के लोगों का कहना है कि रमजान खान गोसेवा के साथ ज्योतिष में पूरा विश्वास रखते हैं। उनके घर में भगवान कृष्ण की नियमित पूजा होती है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को हनुमान चालीसा कंठस्थ याद है। रमजान खान ने श्याम सुरभि वंदना पुस्तक लिखी है।

पिता का कुशलक्षेम लेकर बीएचयू लौटे फिरोज

जागरण संवाददाता, वाराणसी

बीएचयू स्थित संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के साहित्य विभाग में नियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर फिरोज खान बुधवार को अपने घर जयपुर (बगरू) से बनारस लौट आए। विवि प्रशासन के सहयोगात्मक रवैये का आभार जताते हुए उन्होंने विरोध करने वालों को ऑडियो क्लिप के जरिए स्नेह की सीख दी। यह ऑडियो यू- ट्यूब पर भी चल रहा है।

नियुक्ति को लेकर उपजे विवाद की चिंता में फिरोज के पिता रमजान खान बीमार पड़ गए थे। इधर, लगातार विरोध से असिस्टेंट प्रोफेसर आहत भी थे और पिता की बीमारी की सूचना मिली तो खुद को रोक न सके। वह सोमवार को अपने जयपुर स्थित पैतृक गांव बगरू गए थे। उनके जाने को लेकर विवि परिसर में तरह-तरह के कयास लगाए जाने लगे थे। वहीं बुधवार को उनकी वापसी ने आशंकाओं पर विराम लगाया। नियुक्ति मामले में विवि प्रशासन तय नियमों के अनुपालन और पारदर्शी प्रक्रिया के अपने बयान पर कायम रहते हुए फिरोज खान के साथ खड़ा है।

वहीं फिरोज का कहना है कि 'वेग का शमन केवल स्नेह से किया जा सकता है, वेग से नहीं। विरोध में जो भी छात्र बैठे हैं उनसे

फिरोज खान। फाइल

फिरोज के समर्थन में निकाली रैली

डॉ फिरोज खान की नियुक्ति पर बुधवार शाम ज्वाइंट एक्शन कमेटी के नेतृत्व में बीएचयू के सिंह द्वार से रविदास गेट तक रैली निकाली गई। इस दौरान संविधान जिंदाबाद के नारे लगाए गए। सभा में छात्रों ने कहा कि डॉ फिरोज खान को तत्काल नौकरी पर रखने के साथ विश्वविद्यालय को उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। धर्म और जाति के आधार पर भेदभाव असंवैधानिक है।

अपील है कि एक बार मुझे जान-समझ तो लें। मौका तो दें। विवि प्रशासन चाहेगा तो मैं स्वयं छात्रों से बातचीत करने जा सकता हूं।'

विरोध फिरोज से नहीं बीएचयू से : संस्कृत पढ़ाने के लिए फिरोज खान की नियुक्ति के बाद से प्रदर्शन कर रहे छात्रों ने बुधवार शाम धरनास्थल पर प्रेसवार्ता की और कहा कि हमारा विरोध फिरोज खान से नहीं बल्कि हम उनकी नियुक्ति की प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए बीएचयू प्रशासन का विरोध कर रहे हैं। मामले को बेवजह सांप्रदायिक रंग दिया जा रहा है।

भाषा का धर्म से क्या लेना-देना : परेश रावल: बीएचयू स्थित संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय में नवनियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर फिरोज खान के बीएचयू छात्रों द्वारा विरोध पर फिल्म अभिनेता व पूर्व भाजपा सांसद परेश रावल ने ट्वीट कर हैरानी जताई है। उन्होंने बीएचयू में मुस्लिम प्रोफेसर की नियुक्ति को लेकर ट्वीट किया तो उनके फालोवर के बीच भी यह प्रकरण चर्चा का केंद्र बन गया।

लोगों ने मुखर होकर परेश रावल के पोस्ट पर अपनी प्रतिक्रिया दी। ट्विटर पर लिखा कि प्रोफेसर फिरोज खान के विरोध से स्तब्ध हूं। किसी भाषा का धर्म से क्या लेना-देना है। प्रोफेसर फिरोज ने संस्कृत में पीएचडी की है। उन्हें पढ़ाने से रोकना मूर्खतापूर्ण है। इसी पोस्ट में उन्होंने कहा कि उसी तर्क से महान गायक स्व. मोहम्मद रफी को भजन नहीं गाना चाहिए था और नौशाद साहब को भजनों को कंपोज नहीं करना चाहिए था।

रखे विचार

उत्तराखंड के कोटद्वार में पांच दिवसीय मुस्लिम योग शिविर की शुरुआत, मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने किया उद्घाटन

योग को धर्म या पूजा पद्धति से जोड़ना गलत : त्रिवेंद्र

जागरण संवाददाता, पौड़ी गढ़वाल

उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में महर्षि कण्व की तपोस्थली कण्वाश्रम (कोटद्वार) स्थित वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय में बुधवार से पांच-दिवसीय मुस्लिम योग-साधना शिविर शुरू हो गया। शिविर का उद्घाटन करते हुए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि योग को धर्म विशेष अथवा पूजा पद्धति से जोड़ना पूरी तरह गलत है। योग सबका है और तन-मन को स्वस्थ रहने के लिए इसका अभ्यास सभी को करना चाहिए। इस मौके पर उन्होंने महाविद्यालय परिसर में स्थापित 'भरत स्मारक' का लोकार्पण भी किया गया। शिविर के पहले दिन वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के अलावा आसपास के स्थानों से आए मुस्लिम समुदाय के लगभग 30 बच्चों ने विभिन्न योगासनों का अभ्यास किया। महाविद्यालय के कुलपति योगीराज डॉ. विश्वपाल जयंत (आधुनिक भीम) ने उन्हें प्राण पावर योग, वज्रासन, शशांकासन, जागो शीर्षासन, मयूरासन, पद्मासन, शेरासन आदि यौगिक क्रियाओं का

पौड़ी गढ़वाल के कण्वाश्रम (कोटद्वार) स्थित वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय में बुधवार से पांच-दिवसीय मुस्लिम योग-साधना शिविर शुरू हुआ। शिविर में योगाभ्यास करते मुस्लिम साधक। जागरण

अभ्यास कराया। शिविर में कनाडा से आए योग प्रशिक्षु भी शामिल हुए।

इस मौके पर परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि आज योग के अर्थ और शक्ति को समझने की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने योग की शक्ति को समझा और अब 190 देशों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। कहा कि योग धर्म एवं समुदाय में बंधा हुआ नहीं है, बल्कि सभी धर्मों को आपस में जोड़ने का काम करता है। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के मार्गदर्शक इंद्रेश कुमार ने कहा कि विश्व के तमाम देश योग को अपना रहे हैं। राम मंदिर का ऐतिहासिक फैसला आने के बाद भी देश में सांप्रदायिक सौहार्द बढ़ा है।

वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय में एक ओर सुबह से ही वेद ऋचाओं के बीच यज्ञ में आहुतियां पड़ रही थीं, वहीं मुस्लिम समुदाय के लोग नमाज अदा कर रहे थे। आयोजकों के दावे पर यकीन करें तो विश्व स्तर पर यह पहला मौका है, जब मुस्लिम समुदाय के लोग धर्म-समुदाय के बंधनों को तोड़कर हवन-यज्ञ के बीच यौगिक क्रियाओं का हिस्सा बने। शिविर में शामिल इन लोगों का स्पष्ट कहना था कि सभी धर्म-संप्रदाय स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ विचारों का वास मानते हैं। ऐसे में उन्होंने स्वस्थ शरीर पाने के लिए यदि यौगिक क्रियाओं में भाग लिया जाए तो इसमें कुछ भी गलत नहीं।

मिसाल : ये हैं वेद ज्ञाता पंडित हयातउल्ला चतुर्वेदी

गुरुदीप त्रिपाठी, प्रयागराज

बीएचयू में संस्कृत विषय के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर फिरोज खान की नियुक्ति के हो-हल्ले के बीच हयातउल्ला के बारे में पढ़िए। वह हयातउल्ला, जो संस्कृत के साथ चारों वेदों का ज्ञान होने के कारण पंडित हयातउल्ला चतुर्वेदी नाम से पहचाने गए। वह संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए अमेरिका, नेपाल, मॉरीशस भी गए। वहां संस्कृत की महिमा बखान की। फिरोज खान मामले से दुखी हयातउल्ला सेवानिवृत्त होने के बाद अब दूसरे स्कूलों में निशुल्क संस्कृत पढ़ा रहे हैं।

78 वर्षीय हयातउल्ला प्रयागराज से कटकर जिला बने कौशांबी के छीता हर्रायपुर के रहने वाले हैं। उनके नाम के आगे पंडित और बाद में चतुर्वेदी लिखा देख और सुनकर लोग चौंक जाते हैं। भले ही कोई चौंके लेकिन नाम के आगे और पीछे लगीं ये उपाधियां उन्हें उनके संस्कृत ज्ञान ने दिलाई। पांच वक्त के नमाजी हयात उल्ला को चारों वेदों का ज्ञान है। इसी वजह से उन्हें 1967 में एक राष्ट्रीय सम्मेलन में 'चतुर्वेदी' की उपाधि दी गई। इतना ही नहीं, डीएम रहे अखंड प्रताप सिंह ने उनकी विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें पंडित की उपाधि दी।

वेद और कुरान एक : 2003 में एमआर शेरवानी इंटर कॉलेज इलाहाबाद (प्रयागराज) से सेवानिवृत्त पंडित हयातउल्ला चतुर्वेदी ने अर्से तक हिंदी और संस्कृत पढ़ाई। संस्कृत की मौजूदा दशा से वह चिंतित हैं। हिंदी और अंग्रेजी पर भी उनकी वैसी ही पकड़ है, जैसी संस्कृत पर। दैनिक जागरण से बातचीत में बताया कि वेद और कुरान एक हैं। धर्म के ठेकेदारों ने भ्रमित किया है। बीएचयू का ताजा प्रकरण भी चिंता का विषय है।

पंडित हयातउल्ला चतुर्वेदी ने कहा कि यदि लोगों को संस्कृत की जानकारी नहीं है तो वह संपूर्ण नहीं हैं। बीएचयू में मुस्लिम शिक्षक की नियुक्ति पर छात्र-छात्राएं पढ़ना नहीं चाहते हैं, यह संकीर्णता का भाव है।